** माँग विश्लेषण **

(Demand Analysis)

माँग (Demand) :→ "कोई उपभोक्ता किसी समय पर तथा दी गयी कीमत पर किसी वस्तु की जितनी मात्रा खरीदता है, उसे उस समय पर वस्तु की माँग कहते हैं।"

" The quantity of a commodity purchased by a consumer at a given price and at a given time is called as the demand of the commodity at that time."

प्रो॰ पेन्सन के अनुसार, "माँग एक प्रभावी इच्छा है।" (Demand is an effective desire).

किसी इच्छा के प्रभावी होने के लिऐ अर्थात वस्तु की माँग के लिऐ पाँच शर्तें आवश्यक हैं-

(1) वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा
(Desire for a commodity)

(2) वस्तु को खरीदने की क्षमता
(Power to purchase the commodity)

(3) खर्च करने की तत्परता
(Willingness to spend)

(4) दी गयी कीमत (Given Price)

(5) दिया गया समय (Given Time)

Scanned with CamScanner

Note :→ अर्थशास्त्र में माँग विश्लेषण करने के लिऐ उपभोक्ता द्वारा वस्तु की खरीदी गयी मात्रा को ही माँग कहा जाता है।

** व्यक्तिगत माँग (Individual Demand) :→

" किसी अकेले उपभोक्ता द्वारा किसी समय पर तथा दी गयी कीमत पर किसी वस्तु की जितनी मात्रा खरीदी जाती है, उसे उस उपभोक्ता की व्यक्तिगत माँग कहते है।" अलग- अलग उपभोक्ताओं की व्यक्तिगत माँग भी अलग- अलग होती है।

** बाजार माँग (Market Demand) :→

" किसी समय पर तथा दी गयी कीमत पर किसी बाजार में उपस्थित सभी उपभोक्ताओं द्वारा किसी वस्तु की जितनी मात्रा खरीदी जाती है, उसे उस समय पर उस वस्तु की बाजार माँग कहते है।" बाजार माँग, व्यक्तिगत माँग का कुल योग होती है।

उदाहरण : माना किसी समय पर किसी बाजार में तीन उपभोक्ता टमाटर खरीदते है। इन उपभोक्ताओं की व्यक्तिगत एवं बाजार माँग को निम्नलिखित तालिका (काल्पनिक) में व्यक्त किया गया है -

Scanned with CamScanner

क्र० सं०	उपभोक्ता	टमाटर की मात्रा (kg) (माँग)
1.	A	2
2.	B	3
3.	C	3
योग	–	8

उपरोक्त तालिका में उपभोक्ताओं A, B व C की व्यक्तिगत माँग क्रमश: 2 kg, 3 kg तथा 3 kg है, जबकि बाजार माँग 8 kg है।

बाजार माँग = सभी उपभोक्ताओं की माँग का योगफल
$q = \sum_{i=1}^{n} q_i$ जहाँ q_i किसी उपभोक्ता 'i' की व्यक्तिगत माँग है। q = बाजार माँग

** **माँग फलन (Demand function) :→**

किसी वस्तु की माँग और उसे प्रभावित करने वाले कारकों के बीच फलनात्मक सम्बन्ध को माँग फलन कहते हैं।"

एक सामान्य माँग फलन को निम्नलिखित प्रकार से लिख सकते हैं –

Scanned with CamScanner

$$D = f(P, P_r, Y, T)$$

जहाँ P = वस्तु की कीमत

P_r = सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतें

Y = उपभोक्ता की आय.

T = रुचि, फैशन, मौसम आदि।

** माँग को प्रभावित करने वाले तत्व (या कारक) :→

(Factors Affecting the Demand of a Commodity)

किसी वस्तु की माँग को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित है -

(1) वस्तु की कीमत :→ माँग को प्रभावित करने वाला सबसे प्रमुख कारक है। सामान्यत: कम कीमत पर वस्तु की माँग अधिक तथा अधिक कीमत पर वस्तु की माँग कम होती है।

(2) उपभोक्ता की आय :→ सामान्यत: उपभोक्ता की आय अधिक होने पर किसी वस्तु की माँग भी अधिक होती है, तथा उपभोक्ता की आय कम होने पर वस्तु की माँग भी कम हो जाती है।

Scanned with CamScanner

(3) सम्बन्धित वस्तुओं की कीमत :→

सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतें भी माँग को प्रभावित करती हैं। सम्बन्धित वस्तुऐं दो प्रकार की होती हैं - (1) स्थानापन्न वस्तुऐं (Substitutes) तथा (2) पूरक वस्तुऐं (Complementary Goods)

उदाहरण के लिऐ → चाय तथा कॉफी सम्बन्धित वस्तुऐं हैं। चाय की कीमत बढ़ने पर कॉफी की माँग बढ़ जाती है, क्योंकि तुलनात्मक रुप से कॉफी सस्ती हो जाती है।

(4) रुचि, फैशन, मौसम आदि :→ यदि उपभोक्ता की रुचि किसी विशेष ब्रान्ड में है तो उसकी माँग अधिक होगी। उदाहरण के लिऐ, यदि कोल्ड ड्रिंक्स (शीतल पेय) में उपभोक्ता का पसंदीदा ब्रान्ड 'कोका कोला' है तो 'कोका कोला' की माँग अधिक होगी। इसी प्रकार जो वस्तुऐं फैशन में हैं, उनकी माँग अधिक होगी। माँग पर मौसम का भी प्रभाव पड़ता है। सर्दियों में गर्म कपड़ों की माँग तथा बरसात में छातों की माँग बढ़ जाती है।

इसके अतिरिक्त भविष्य में कीमत परिवर्तन की आशा, युद्ध होने की आशंका या किसी प्राकृतिक आपदा के होने के कारण भी वस्तुओं की माँग परिवर्तित हो जाती है।

Scanned with CamScanner

** माँग का नियम (Law Of Demand)

इस नियम के अनुसार, "अन्य बातों के समान रहने पर, किसी वस्तु की माँग और कीमत में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है। कीमत बढ़ने पर वस्तु की माँग कम हो जाती है और कीमत कम होने पर वस्तु की माँग बढ़ जाती है।"

गणितीय रूप में →

$$q \propto \frac{1}{p}$$

जहाँ q = वस्तु की माँग
p = वस्तु की कीमत

अन्य बातों के समान रहने का अर्थ :→

'अथवा'

माँग का नियम लागू होने की शर्तें :→

(1) उपभोक्ता विवेकशील होना चाहिऐ।

(2) उपभोक्ता की आय में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिऐ।

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

(3) सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

(4) उपभोक्ता की रुचि, फैशन आदि में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

*** वस्तु की कीमत के अतिरिक्त अन्य किसी भी कारक में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

Note**:→ माँग का नियम उपभोक्ता के व्यवहार का एक गुणात्मक कथन (Qualitative Statement) है। यह नियम माँग को कीमत का फलन मानता है तथा अन्य चरों को स्थिर रखकर माँग पर कीमत के प्रभाव को बताता है। [$q = f(P)$] यह नियम केवल यह बताता है कि कीमत बढ़ने पर माँग कम और कीमत कम होने पर माँग बढ़ जाती है।

यह नियम यह नहीं बताता कि कितनी कीमत कम या ज्यादा होने पर माँग में कितना परिवर्तन होगा।

अतः माँग का नियम मात्रात्मक कथन (Quantitative Statement) नहीं है।

Scanned with CamScanner

** माँग वक्र :→ (Demand Curve) :→

"अन्य बातों के समान रहने पर, किसी वस्तु की माँग और कीमत के बीच खींचे गये वक्र को माँग वक्र कहते हैं।"

"Other things remaining the same, the curve drawn between the demand and price of a commodity is known as demand curve."

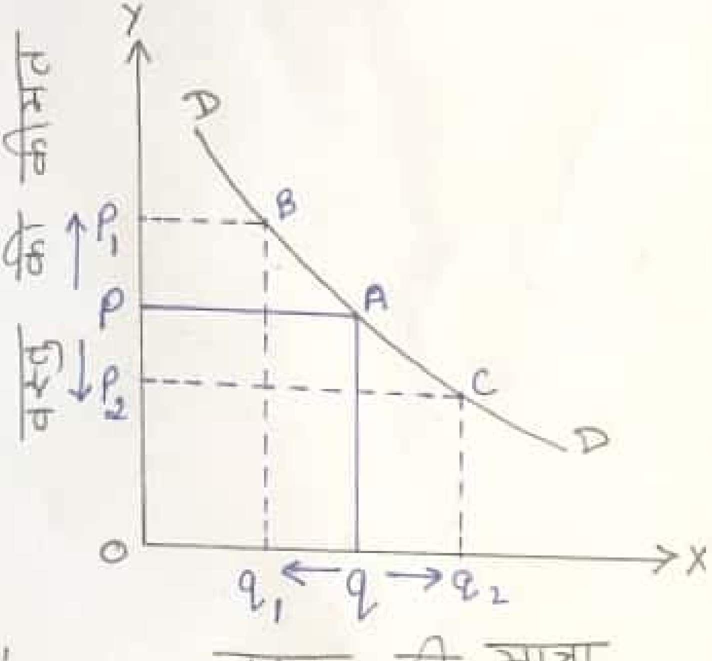

चित्र में, 'DD' एक सामान्य वस्तु का माँग वक्र है। जब वस्तु की कीमत 'OP' है, तब वस्तु की माँग 'Oq' है। जैसे ही कीमत बढ़कर 'OP_1' हो जाती है, माँग घटकर 'Oq_1' हो जाती है। इसी प्रकार, जैसे ही कीमत घटकर 'OP_2' होती है, माँग बढ़कर 'Oq_2' हो जाती है। अत: माँग वक्र बाँये से दाँये नीचे की ओर झुकता हुआ होता है। माँग वक्र, माँग के नियम का ही ग्राफीय या चित्रमय निरुपण है।

Scanned with CamScanner

**** माँग वक्र बाँये से दाँये नीचे की ओर झुकता हुआ होता है :→**

('अथवा' माँग का नियम लागू होने के कारण) :→ माँग वक्र बाँये से दाँये नीचे की ओर झुकता हुआ होता है। इसके मुख्यत : चार प्रमुख कारण हैं :→

(1) सीमान्त तुष्टिगुण ह्रासमान नियम :→

माँग का नियम लागू होने का सबसे प्रमुख कारण सीमान्त तुष्टिगुण ह्रासमान नियम है। इस नियम के अनुसार, किसी उपभोक्ता द्वारा वस्तु की इकाइयों का उत्तरोत्तर उपभोग करने पर सीमान्त तुष्टिगुण लगातार कम होता चला जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि वस्तु की अधिक मात्रा का उपभोग करने पर सीमान्त तुष्टिगुण कम होगा। मार्शल के अनुसार, कोई विवेकशील उपभोक्ता किसी वस्तु की उतनी कीमत देने को तत्पर होगा, जितना उसमें सीमान्त तुष्टिगुण होगा। अर्थात → वस्तु की कीमत = सीमान्त तुष्टिगुण

$$P = MU$$

इसलिऐ, सीमान्त तुष्टिगुण ह्रासमान नियम से →

(i) वस्तु की अधिक मात्रा ⟶ कम सीमान्त तुष्टिगुण
↓
कम कीमत

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

(ii) वस्तु की कम मात्रा → अधिक सीमान्त तुष्टिगुण
↓
अधिक कीमत

$\therefore \boxed{q \propto \frac{1}{p}}$

अत: वस्तु की माँग और कीमत में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है। अत: माँग वक्र बाँये से दाँये नीचे की ओर झुकता हुआ होता है।

(२) आय प्रभाव (Income Effect) :→

जब किसी वस्तु की कीमत कम होती है, तो उपभोक्ता अपनी निश्चित आय से उस वस्तु की अधिक मात्रा खरीद सकता है अर्थात उपभोक्ता की क्रय शक्ति (Purchasing Power) बढ़ जाती है। इसी प्रकार वस्तु की कीमत अधिक होने पर उपभोक्ता की क्रय शक्ति कम हो जाती है। दूसरे शब्दों में, अन्य बातों के समान रहने पर, वस्तु की कीमत बदलने पर उपभोक्ता की सापेक्षिक आय (क्रय शक्ति) बदल जाती है। (परन्तु मौद्रिक आय में परिवर्तन नहीं होता) इसे आय प्रभाव कहते हैं। आय प्रभाव के कारण, माँग का नियम लागू हो जाता है और माँग वक्र बाँये से दाँये नीचे की ओर झुकता हुआ होता है।

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

③ प्रतिस्थापन प्रभाव (Substitution Effect) :→

जब किसी वस्तु की कीमत बढ़ जाती है तो उपभोक्ता उस वस्तु के स्थान पर, उसकी उन स्थानापन्न वस्तुओं को खरीदने लगता है, जिनकी कीमत कम है। अत: कीमत बढ़ने पर वस्तु की माँग कम हो जाती है। कीमत परिवर्तित होने पर स्थानापन्न वस्तुओं की माँग में परिवर्तन, स्थानापन्न प्रभाव या प्रतिस्थापन प्रभाव कहलाता है।

इस प्रकार प्रतिस्थापन प्रभाव के कारण भी माँग का नियम लागू होता है।

(4) उपभोक्ताओं की संख्या में परिवर्तन :→
(Change in the Number of Consumers) :→

जब किसी वस्तु की कीमत कम होती है तो आय प्रभाव के कारण, वे उपभोक्ता भी उस वस्तु को खरीद सकते हैं, जो निम्न आय के कारण खरीद नहीं पा रहे थे। अत: उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ जाती है और वस्तु की माँग भी बढ़ जाती है। इसी प्रकार वस्तु की कीमत अधिक होने पर वह वस्तु कुछ उपभोक्ताओं की पहुँच से बाहर हो जायेगी और वस्तु की माँग कम हो जायेगी।

Scanned with CamScanner

**Note :→ (1) यदि कोई उपभोक्ता किसी वस्तु के किसी विशेष ब्रान्ड का शौकीन है तो प्रतिस्थापन प्रभाव लागू नहीं होगा, बशर्ते कि उसकी आय पर्याप्त हो।

** यदि उपरोक्त प्रश्न '1' अंक का हो तो उत्तर इस प्रकार लिखेंगे :→
पहले माँग का नियम लिखेंगे। फिर लिखेंगे –
" चूँकि माँग और कीमत में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है, इसलिए माँग वक्र बाँये से दाँये नीचे की ओर झुकता हुआ होता है अर्थात ऋणात्मक ढाल वाला होता है।
** यदि प्रश्न '2' अंक का हो तो उपरोक्त उत्तर लिखकर माँग वक्र का चित्र भी बना देंगे।
** यदि प्रश्न '3 अंक' का हो तो उत्तर इस प्रकार लिख सकते हैं :→
माँग वक्र बाँये से दाँये नीचे की ओर झुकता हुआ होता है। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :→
(1) सीमान्त तुष्टिगुण ह्रासमान नियम :→
सीमान्त तुष्टिगुण ह्रासमान नियम के

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

अनुसार, यदि उपभोक्ता किसी वस्तु की अधिक इकाइयों का उपभोग करता है तो उसे कम सीमान्त तुष्टिगुण प्राप्त होगा और वह वस्तु की कम कीमत देगा अर्थात वस्तु की माँग और कीमत में विपरीत सम्बन्ध होगा।

(2) आय प्रभाव :→ किसी वस्तु की कीमत कम होने पर उपभोक्ता की सापेक्षिक आय (क्रय शक्ति) बढ़ जाती है तथा वस्तु की कीमत अधिक होने पर सापेक्षिक आय कम हो जाती है। सापेक्षिक आय बढ़ने पर वस्तु की माँग बढ़ जाती है तथा सापेक्षिक आय कम होने पर माँग कम हो जाती है। अतः माँग का नियम लागू हो जाता है।

(3) प्रतिस्थापन प्रभाव :→ किसी वस्तु की कीमत अधिक होने पर उपभोक्ता उस वस्तु के स्थान पर सस्ती स्थानापन्न वस्तु का उपभोग करना प्रारम्भ कर देता है। अतः वस्तु की माँग कम हो जाती है। अतः प्रतिस्थापन प्रभाव के कारण भी माँग और कीमत में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है, जिसके कारण माँग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला होता है।

Scanned with CamScanner

** गिफिन का विरोधाभास :→

(Giffin's Paradox) :→ माँग का नियम किसी वस्तु की माँग और कीमत के बीच विपरीत सम्बन्ध को व्यक्त करता है और इस कारण माँग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला होता है।

सर्वप्रथम इंग्लैंड के अर्थशास्त्री 'राबर्ट गिफिन' ने बताया कि कुछ विशेष प्रकार की घटिया वस्तुओं (Inferior Goods) पर माँग का नियम लागू नहीं होता और

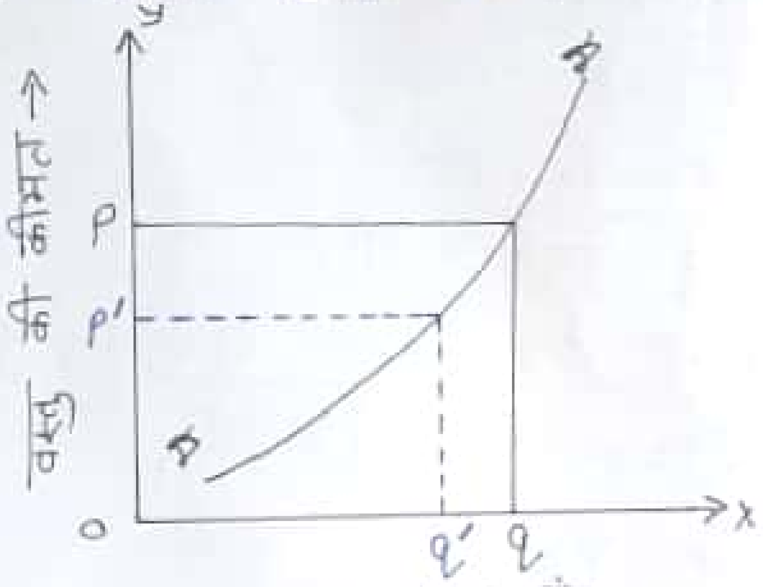

ऐसी वस्तुओं के लिऐ माँग वक्र धनात्मक ढाल वाला होता है। इस विरोधाभास को 'गिफिन का विरोधाभास' कहते हैं और जिन घटिया वस्तुओं पर यह विरोधाभास लागू होता है, उन्हें गिफिन वस्तुऐं कहते हैं।

"गिफिन वस्तुऐं वे घटिया वस्तुऐं होती हैं जिन्हें उपभोक्ता इसलिए खरीदता है, क्योंकि

(P.T.O)

उसकी आय इतनी कम होती है कि वह श्रेष्ठ (अच्छी) वस्तुओं को नहीं खरीद पाता क्योंकि श्रेष्ठ वस्तुओं की कीमत ज्यादा होती है।" उदाहरण के लिऐ → गेहूँ की तुलना में 'रागी' और 'मंडवा' घटिया वस्तुऐं हैं।

"गिफिन वस्तुओं की कीमत कम होने पर इनकी माँग भी कम हो जाती है अर्थात इन वस्तुओं पर माँग का नियम लागू नहीं होता और माँग वक्र का ढाल धनात्मक होता है।" इसी विरोधाभास को गिफिन का विरोधाभास कहते हैं।

चित्र में, 'DD' एक गिफिन वस्तु के माँग वक्र को निरुपित करता है। जब वस्तु की कीमत 'OP' है तब वस्तु की माँग 'OQ' है। जैसे ही वस्तु की कीमत घटकर OP' हो जाती है, माँग घटकर OQ' हो जाती है। स्पष्ट है कि गिफिन वस्तुओं पर माँग का नियम लागू नहीं होता।

Scanned with CamScanner

** गिफिन वस्तु होने की शर्तें :→

किसी घटिया वस्तु के गिफिन वस्तु होने की निम्नलिखित शर्तें है -

(1) उपभोक्ता की आय इतनी कम है कि वह श्रेष्ठ वस्तु को खरीदने में असमर्थ है।

(2) उपभोक्ता वस्तु पर अपनी आय का एक बड़ा भाग व्यय करता है।

(3) गिफिन वस्तु के लिऐ प्रतिस्थापन प्रभाव ऋृणात्मक आय प्रभाव से अधिक होता है। अत: कीमत प्रभाव धनात्मक होता है।

(4) गिफिन वस्तुओं के लिऐ माँग वक्र, बाँये से दाँये ऊपर की ओर धनात्मक ढाल वाला होता है।

** घटिया वस्तुओं एवं गिफिन वस्तुओं में अन्तर

वे वस्तुऐं, जिनकी कीमत कम होती है और जिन्हें उपभोक्ता इसलिऐ खरीदता है, क्योंकि उपभोक्ता की आय कम होती है, घटिया वस्तुऐं कहलाती हैं।

गिफिन वस्तुऐं वे घटिया वस्तुऐं होती है, जिन पर माँग का नियम लागू नहीं होता

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

घटिया वस्तुओं पर माँग का नियम लागू होता है, अर्थात माँग वक्र का ढाल ऋणात्मक होता है। इस प्रकार प्रत्येक गिफिन वस्तु एक घटिया वस्तु है, परन्तु प्रत्येक घटिया वस्तु गिफिन वस्तु नहीं है।

** Note :→

(1) कीमत प्रभाव = प्रतिस्थापन प्रभाव + आय प्रभाव

Price Effect = Substitution Effect + Income Effect

(2) सामान्य वस्तु के लिऐ, आय तथा माँग में सीधा सम्बन्ध होता है, अर्थात $q \propto Y$ जहाँ 'q' वस्तु की माँग तथा 'Y' उपभोक्ता की आय है। अत: सामान्य वस्तु के लिऐ 'आय-माँग' वक्र धनात्मक ढाल वाला होता है।

(3) गिफिन वस्तु के लिऐ, आय एवं माँग में विपरीत सम्बन्ध होता है, अर्थात $q \propto \frac{1}{Y}$, अत: गिफिन वस्तुओं के लिऐ 'आय-माँग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला होता है।

(4) आय-माँग वक्र (Income-demand curve) को 'ऐंजिल-वक्र' भी कहते हैं।

Scanned with CamScanner

** स्थानापन्न वस्तुएें तथा पूरक वस्तुएें

(1) स्थानापन्न वस्तुएें (Substitutes) :→

"वे वस्तुएें जिनका प्रयोग एक जैसी आवश्यकता को पूरा करने में किया जाता है, स्थानापन्न वस्तुएें कहलाती है।" यदि 'X' तथा 'Y' एक दूसरे की स्थानापन्न वस्तुएें है तो जिस आवश्यकता को वस्तु 'X' के द्वारा पूरा किया जा सकता है, उसी आवश्यकता को वस्तु 'Y' के द्वारा भी पूरा किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता अपनी आवश्यकता पूरा करने के लिऐ वस्तु 'X' के स्थान पर 'Y' को अथवा 'Y' के स्थान पर 'X' को प्रयुक्त कर सकता है।

उदाहरण → (1) चाय तथा कॉफी

(2) नींबू पानी तथा कोल्ड ड्रिंक

(3) जेल पेन तथा फाउन्टेन पेन

(4) वाइन तथा बीयर

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

** स्थानापन्न वस्तुओं के लिऐ मॉंग वक्र धनात्मक ढाल वाला होता है।

उदाहरण के लिऐ, यदि कॉफी की कीमत बढ़ जाऐ तो अन्य बातों के समान रहने पर, चाय की मॉंग बढ़ जायेगी। इसका कारण यह है कि कॉफी की कीमत बढ़ने पर चाय सापेक्षिक रूप से सस्ती हो जायेगी। चूँकि चाय तथा कॉफी एक दूसरे की स्थानापन्न वस्तुऐं हैं, अतः उपभोक्ता कॉफी का उपभोग करने के बजाय चाय का अधिक उपभोग करेगा।

चित्र में 'Ds Ds' दो स्थानापन्न वस्तुओं 'X' (चाय) तथा 'Y' (काफी) के बीच मॉंग वक्र है। जब कॉफी की कीमत बढ़कर 'P_y' से P_2 हो जाती है तो चाय की मॉंग बढ़कर q_x से q_2 हो जाती है।

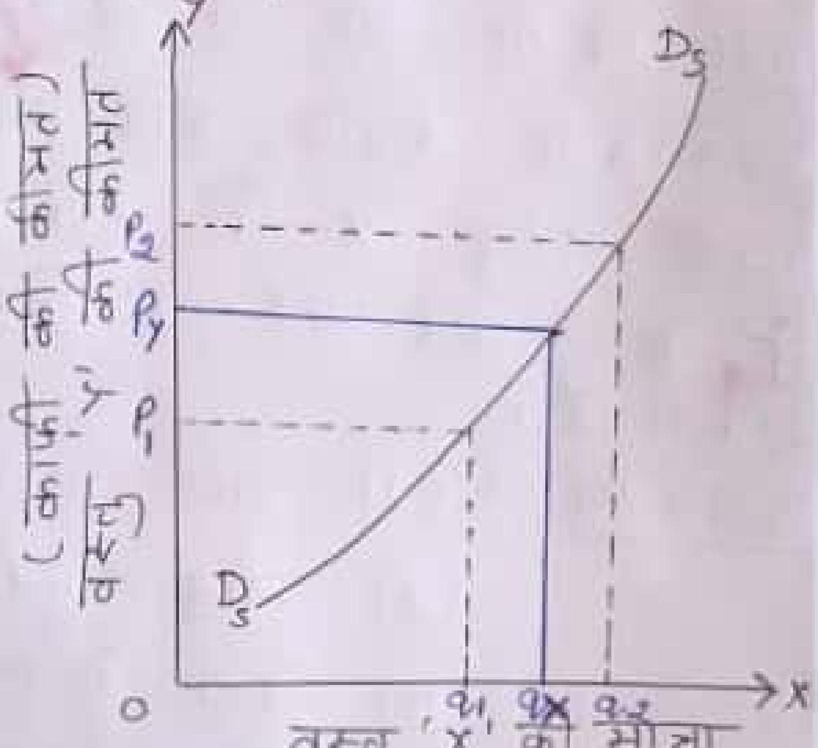

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

जब कॉफी की कीमत घटकर 'P_1' हो जाती है तो चाय की माँग भी घटकर 'Q_1' हो जाती है, क्योंकि कॉफी की कीमत कम होने पर चाय सापेक्षिक रूप से महंगी हो जाती है।

(2) पूरक वस्तुऐं (Complementary Goods)

"वे वस्तुऐं जिनका उपयोग किसी आवश्यकता को पूरा करने के लिऐ एक साथ किया जाता है, पूरक वस्तुऐं कहलाती हैं।"

उदाहरण :→ (1) जूते तथा जुराबें
(2) कागज तथा पेन
(3) स्कूटर तथा पेट्रोल
(4) बैट तथा बॉल

पूरक वस्तुओं में से एक के न होने पर दूसरी वस्तु का प्रयोग नहीं हो सकता। उदाहरण के लिऐ, पेट्रोल के बिना स्कूटर नहीं चल सकता।

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

** पूरक वस्तुओं के लिऐ माँग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला होता है। उदाहरण के लिऐ, यदि स्कूटर की कीमत बढ़ जाऐ तो पेट्रोल की माँग कम हो जायेगी। इसका कारण यह है कि स्कूटर की कीमत बढ़ने पर स्कूटर की माँग कम हो जायेगी। परिणामस्वरूप अधिक पेट्रोल की आवश्यकता नहीं होगी और पेट्रोल की माँग कम हो जायेगी।

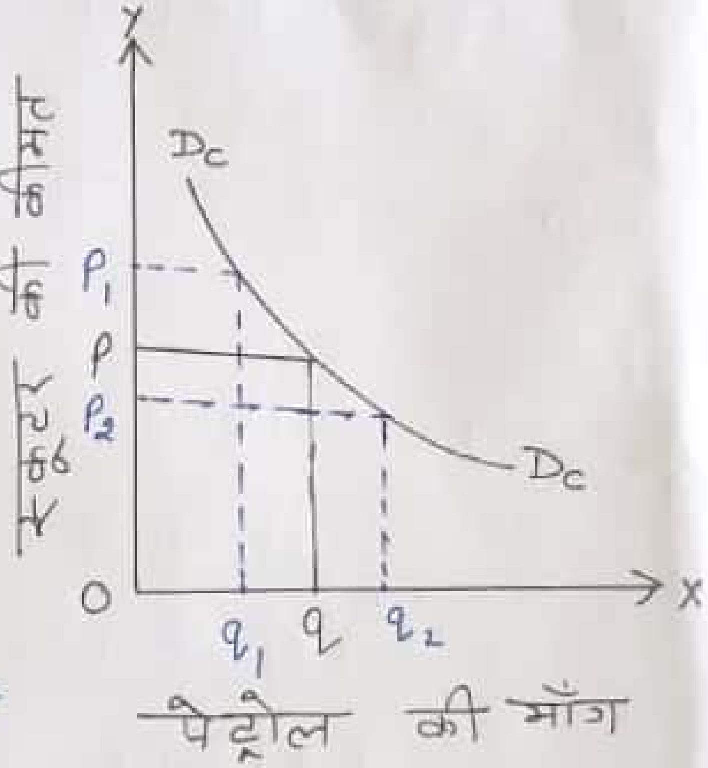

चित्र में '$D_c D_c$' दो पूरक वस्तुओं के माँग वक्र को निरुपित करता है। जब स्कूटर की कीमत 'OP' से बढ़कर 'OP_1' हो जाती है तो पेट्रोल की माँग 'Oq' से घटकर 'Oq_1' रह जाती है। जब स्कूटर की कीमत घटकर 'OP_2' हो जाती है तो पेट्रोल की माँग बढ़कर 'Oq_2' हो जाती है। इस प्रकार पूरक वस्तुओं के लिऐ माँग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला होता है।

Scanned with CamScanner

**** Note :→**

(1) पूर्ण स्थानापन्न वस्तुओं (Perfect Substitutes) के बीच माँग वक्र एक सरल रेखा के रूप में होता है।

(2) पूर्ण पूरक वस्तुओं (Perfect Complementary Goods) के बीच माँग वक्र 'L' (एल) आकार का होता है।

(3) व्यवहार में, वस्तुऐं न तो पूर्ण स्थानापन्न होती हैं और न ही पूर्ण पूरक होती हैं।

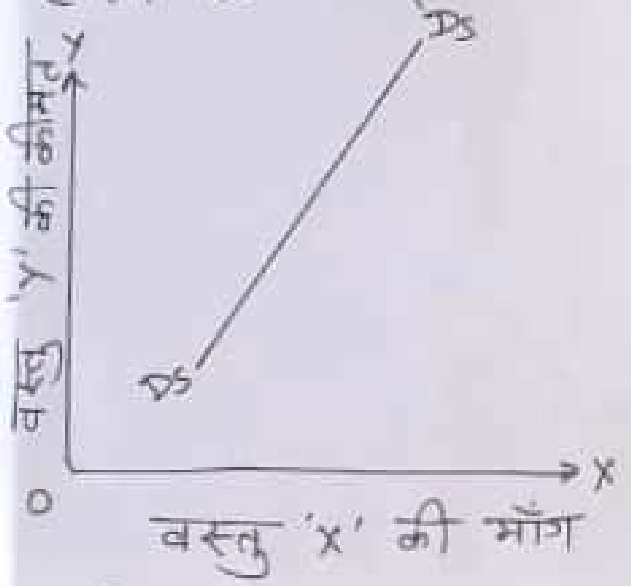

(पूर्णतः स्थानापन्न वस्तुऐं)
①

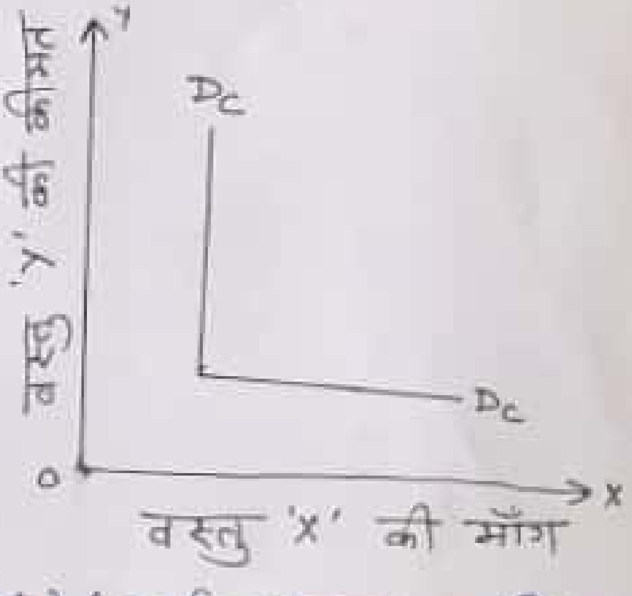

(पूर्णतः पूरक वस्तुऐं)
②

** माँग में संकुचन तथा माँग में कमी :-

(Contraction and decrease in demand)

"जब किसी वस्तु की कीमत बढ़ने पर माँग में कमी हो जाती है तो इसे माँग में संकुचन कहते हैं।"

"जब वस्तु की कीमत के अतिरिक्त किसी और कारण से वस्तु की माँग घटती है तो इसे माँग में कमी कहते हैं।" उदाहरण के लिए :- उपभोक्ता की आय कम होने पर वस्तु की माँग में कमी हो जाती है।

माँग में संकुचन, एक ही माँग - वक्र पर होता है, जबकि माँग में कमी होने पर माँग वक्र बाँयी ओर खिसक जाता है।

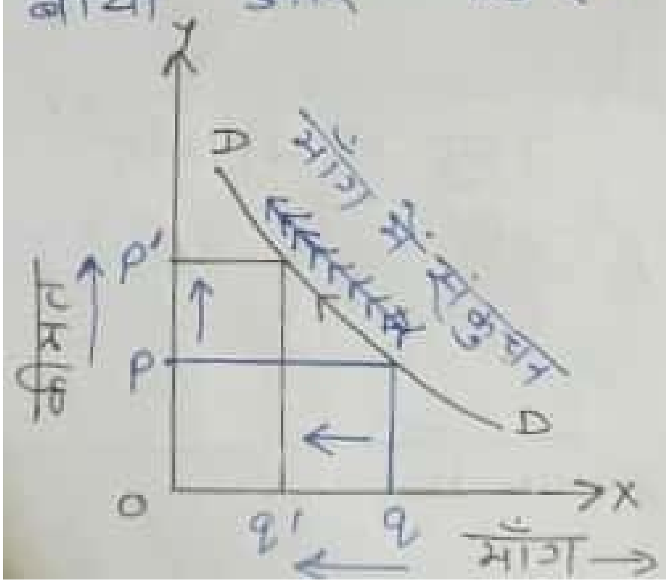

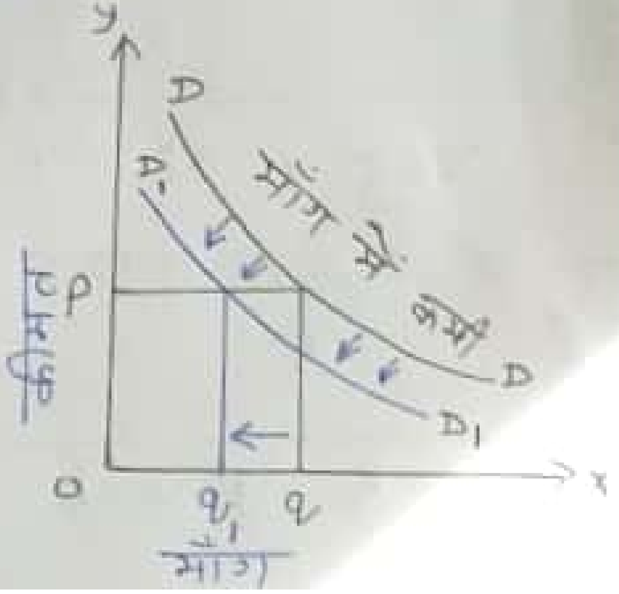

Scanned with CamScanner

** माँग में विस्तार तथा माँग में वृद्धि :→ (Extension and Increase in Demand.)

"किसी वस्तु की कीमत में कमी होने पर वस्तु की माँग बढ़ जाना, माँग में विस्तार कहलाता है।"

माँग में विस्तार, एक ही माँग वक्र पर होता है।

"वस्तु की कीमत स्थिर रहने पर, अन्य किसी कारण से वस्तु की माँग बढ़ जाना, माँग में वृद्धि कहलाता है।"

उदाहरण के लिऐ → उपभोक्ता की आय बढ़ जाने पर किसी वस्तु की माँग में वृद्धि हो जाती है।

माँग में वृद्धि होने पर, माँग वक्र दाँयी ओर खिसक जाता है।

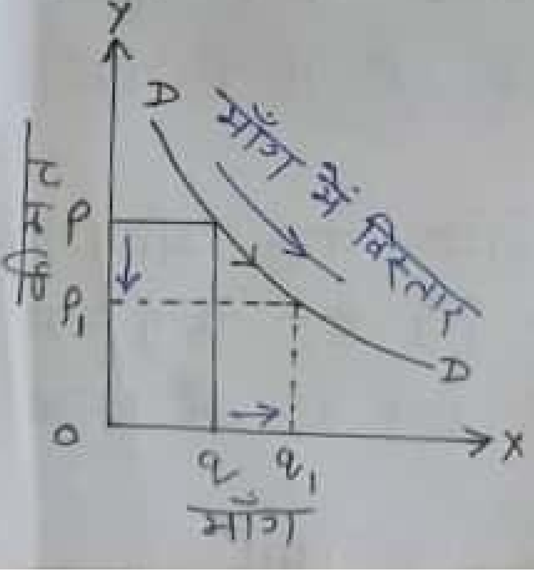

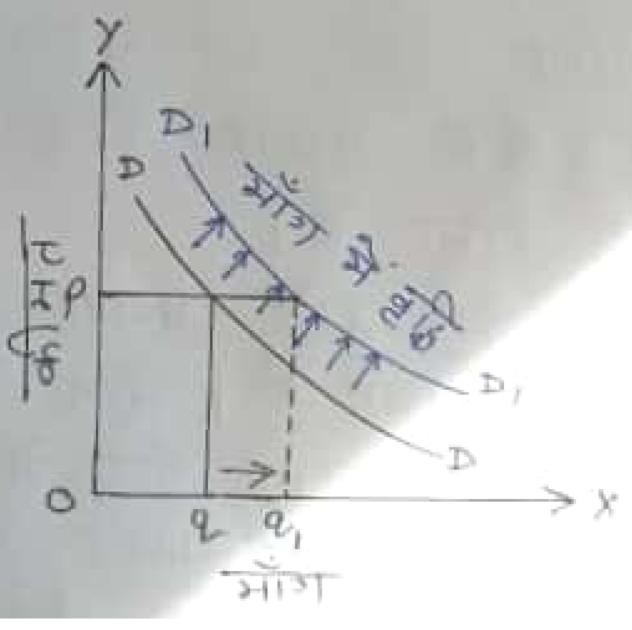

Scanned with CamScanner

Note :→ (1) माँग में संकुचन तथा विस्तार केवल वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण होता है। अन्य कारक स्थिर रहते हैं।
(अर्थात माँग के नियमानुसार परिवर्तन होते हैं)

$$q = f(P)$$

(i.e., quantity demanded of the commodity depends only on price of the commodity)

(2) माँग में कमी अथवा वृद्धि की स्थिति में वस्तु की कीमत स्थिर रहती है तथा किसी अन्य कारण से माँग में परिवर्तन होता है। अर्थात → P = Constant (स्थिर)

$$q = f(Y, P_r, W, \text{------})$$

Y = उपभोक्ता की आय, P_r = सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतें, W = मौसम, फैशन, रुचि आदि

(3) माँग में संकुचन अथवा विस्तार होने पर माँग वक्र नहीं बदलता, अर्थात माँग में संकुचन अथवा विस्तार एक ही माँग वक्र पर होता है।
माँग में वृद्धि अथवा कमी होने पर माँग-वक्र बदल जाता है। माँग में वृद्धि होने पर माँग-वक्र दाँयी ओर तथा माँग में कमी होने पर माँग-वक्र बाँयी ओर विस्थापित होता है।

Scanned with CamScanner